विचार बिन्दु

धन उत्तम कर्मों से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता व दृढ़ निश्चय) से बढ़ता है, चतुराई से फलता फूलता है और संयम से सुरक्षित होता है।

–विदुर

राजस्थान में खाद्य पदार्थों में मिलावट: एक गंभीर सामाजिक चुनौती

राजस्थान की पहचान अपने समृद्ध सांस्कृतिक वैभव, पारंपरिक स्वाद और विशिष्ट खानपान के लिए जानी जाती है। यहाँ का 'दाल-बाटी-चूरमा', 'घेवर', 'प्याज कचौरी' और 'मिर्ची बड़ा' न केवल स्थानीय जीवन का हिस्सा हैं बल्कि राजस्थान की आतिथ्य संस्कृति का प्रतीक भी हैं। मगर दुख की बात है कि जिन खाद्य परंपराओं पर प्रदेश को गर्व रहा है, आज वे ही मिलावट की मार झेल रही हैं। खुले बाजारों और त्योहारी सीजन में खाद्य पदार्थों में मिलावट अब सामान्य सी बात हो गई है, जो न केवल उपभोक्ता के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है बल्कि यह समाज के नैतिक ढाँचे को भी कमजोर करती है।

मिलावट केवल दूध, घी या मसालों तक सीमित नहीं रही। आज यह खाद्य श्रृंखला के लगभग हर हिस्से में प्रवेश कर चुकी है। दूध में सिंथेटिक पदार्थ, मिठाइयों में कृत्रिम रंग और एसेंस, दालों में पत्थर और पॉलिशिंग के रसायन, तेल में खतरनाक औद्योगिक मिश्रण और मसालों में अशुद्ध रासायनिक तत्व मिलाए जा रहे हैं। यह स्थिति सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक छिपी हुई महामारी के समान है – जो धीरे-धीरे हर आयु वर्ग को प्रभावित कर रही है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों से लेकर जयपुर, जोधपुर, कोटा जैसे शहरी केंद्रों तक, बाजारों में मिलावटी खाद्य सामग्री की उपलब्धता आम नागरिक के स्वास्थ्य पर सीधा प्रहार कर रही है।

मिलावट के पीछे कई कारक कार्यरत हैं। सबसे प्रमुख कारण है व्यापारिक लाभ की लालसा। सस्ता माल दिखाकर अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति अनेक छोटे-बड़े व्यापारियों में गहरी जड़ें जमा चुकी है। दूसरा बड़ा कारण है निगरानी और प्रवर्तन की सीमित क्षमता। राज्य सरकार के पास खाद्य निरीक्षकों की संख्या अभी भी इतनी नहीं है कि वह हर जिले व हर मंडी स्तर पर कठोर निगरानी रख सके। तीसरी वजह है आम नागरिक का जागरूक न होना। बहुत बार उपभोक्ता केवल कीमत देखकर वस्तु खरीद लेता है, गुणवत्ता की जांच पर ध्यान नहीं देता। यह उपभोक्ताओं की असावधानी उन मिलावटखोरों को बढ़ावा देती है, जो जनता के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने में संकोच नहीं करते।

त्योहारी सीजन में तो स्थिति और अधिक चिंताजनक हो जाती है। दीपावली, होली, तीज, गणगौर जैसे अवसरों पर जब मिठाई और नमकीन की खपत कई गुना बढ़ जाती है, तो मुनाफाखोर तत्व नकली दूध, सिंथेटिक मावा और रासायनिक रंगों का प्रयोग करके हजारों टन मिठाइयाँ बाजार में उतारते हैं। स्वास्थ्य विभाग अक्सर ऐसी सामग्रियों के सैंपल तो लेता है, लेकिन कानूनी प्रक्रिया की जटिलता और न्यायिक देरी के कारण अपराधियों पर कठोर दंड नहीं हो पाता। यही ढीलाई इस अपराध को स्थायी रूप से समाप्त होने से रोकती है।

राजस्थान सरकार ने इस दिशा में कई प्रयास किए हैं। 'राजस्थान राज्य खाद्य एवं औषध प्रशासन' समय-समय पर अभियान चलाकर नमूने एकत्र करता है और दोषी पाए जाने पर कार्रवाई करता है। 'मिशन मिलावट मुक्त राजस्थान' के अंतर्गत हाल के वर्षों में अनेक छापेमारी अभियान चलाए गए हैं। जयपुर, कोटा, अजमेर और उदयपुर में नकली घी एवं मावा बनाने वाली कई फैक्टरियों को बंद कराया गया। सरकार ने 'फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स' जैसी मोबाइल यूनिटें भी शुरू की हैं, जो ग्रामीण इलाकों में जाकर खाद्य नमूनों की प्राथमिक जांच करती हैं। इन पहलों से कुछ सुधार हुआ है, परंतु समस्या की जड़ें अभी भी गहरी हैं।

> **जहाँ धन की लालसा मानवीय करुणा और जिम्मेदारी पर भारी पड़ती जा रही है। हमें व्यापार में 'लाभ' की जगह 'लाभकारी नैतिकता' की संस्कृति विकसित करनी होगी। राजस्थान जैसे सांस्कृतिक प्रदेश में, जहाँ 'सच्चाई' और 'भरोसे' की परंपरा जीवन का हिस्सा रही है, मिलावट का फैलाव हमारे सामूहिक चरित्र पर प्रश्नचिह्न है। इस अभिशाप से मुक्ति तभी मिलेगी जब सरकार सख्त कानून बनाए, प्रशासन ईमानदारी से उसे लागू करे और जनता सजग उपभोक्ता बनकर अपना अधिकार माँगे।**

मिलावट नियंत्रण के लिए केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। यह एक साझा सामाजिक उत्तरदायित्व है जिसमें उपभोक्ता, व्यापारी, और प्रशासन – तीनों की सहभागिता आवश्यक है। उपभोक्ताओं को खरीदारी के समय सावधान रहना चाहिए। पैक्ड वस्तुओं की एक्सपायरी तिथि, एफएसएसएआई लोगो और निर्माता का विवरण अवश्य जांचना चाहिए। स्थानीय स्तर पर उपभोक्ता समितियों को सक्रिय बनाना और फूड टेस्टिंग कैंप आयोजित करना उपयोगी कदम हो सकते हैं। वहीं व्यापारिक संघों और मंडियों में भी स्वैच्छिक गुणवत्ता परीक्षण तंत्र विकसित किए जाने चाहिए।

मीडिया की भूमिका भी इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब प्रेस या सोशल मीडिया पर मिलावट के मामलों का खुलासा होता है, तो समाज और प्रशासन दोनों ही सजग होते हैं। परंतु आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे खुलासे केवल सनसनी फैलाने तक न सीमित रहकर व्यवस्था सुधार की दिशा में ठोस दबाव उत्पन्न करें। लोकहित याचिकाओं और नागरिक संगठनों की सक्रियता इस संघर्ष को और प्रभावी बना सकती है।

सरकार को चाहिए कि मिलावट के मामलों को केवल 'नियम उल्लंघन' नहीं बल्कि 'आपराधिक स्वास्थ्य अपराध' की श्रेणी में लिया जाए। दोषियों को कड़ी सजा, व्यापारिक लाइसेंस की स्थायी निरस्तीकरण और भारी अर्थदंड जैसे दंडात्मक उपायों का कठोर क्रियान्वयन जरूरी है। जिला स्तर पर विशेष फास्ट ट्रैक अदालतें बनाकर इन मुकदमों का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जा सकता है। साथ ही, खाद्य प्रयोगशालाओं की संख्या बढ़ाई जाए ताकि जांच रिपोर्टों में विलंब न हो।

आधुनिक तकनीक भी इस लड़ाई की बड़ी सहयोगी बन सकती है। डिजिटल ट्रेसिंग, ब्लॉकचेन आधारित सप्लाई चेन ट्रैकिंग और मोबाइल टेस्टिंग किट्स का उपयोग शासन ने अब शुरू किया है, लेकिन इसे व्यापक स्तर पर लागू करने की आवश्यकता है। स्कूलों और कॉलेजों में मिलावट विरोधी जनजागरण अभियान चलाया जाए ताकि युवा पीढ़ी संवेदनशील बने और वह गुणवत्ता को लेकर समझदार उपभोक्ता के रूप में उभरे।

इस समस्या का एक सामाजिक पक्ष भी है, जो केवल नियम-कानून से नहीं सुलझता। मिलावट हमारे समाज में नैतिक पतन की निशानी है

जहाँ धन की लालसा मानवीय करुणा और जिम्मेदारी पर भारी पड़ती जा रही है। जब एक दुकानदार यह भूल जाता है कि उसके द्वारा बेचा गया नकली दूध किसी बच्चे के स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है, तब यह केवल कानून का मामला नहीं, बल्कि समाज की अंतरात्मा से जुड़ा सवाल बन जाता है। हमें व्यापार में 'लाभ' की जगह 'लाभकारी नैतिकता' की संस्कृति विकसित करनी होगी।

राजस्थान जैसे सांस्कृतिक प्रदेश में, जहाँ 'सच्चाई' और 'भरोसे' की परंपरा जीवन का हिस्सा रही है, मिलावट का फैलाव हमारे सामूहिक चरित्र पर प्रश्नचिह्न है। इस अभिशाप से मुक्ति तभी मिलेगी जब सरकार सख्त कानून बनाए, प्रशासन ईमानदारी से उसे लागू करे और जनता सजग उपभोक्ता बनकर अपना अधिकार माँगे।

मिलावट के विरुद्ध संघर्ष लंबा है, लेकिन असंभव नहीं। यदि हर नागरिक यह निश्चय कर ले कि वह गुणवत्ता से समझौता नहीं करेगा चाहे कीमत थोड़ी अधिक क्यों न देनी पड़े तो बाजार अपने आप सुधर जाएगा। अंततः, मिलावट मुक्त राजस्थान कोई सरकारी नारा नहीं, बल्कि एक सामाजिक संकल्प होना चाहिए जो हर घर, हर रसोई और हर व्यापारी की चेतना का हिस्सा बने।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

कभी-कभी, कितने असहाय से लगते हैं देश के शासक, रहनुमा लोग----

महावीर सिंह

रहनुमाओं की अदाओं पे फ़िदा है दुनिया,
इस बहकती हुई दुनिया को संभालो यारो
- दुष्यंत कुमार

अभी-अभी 9 दिसंबर को त्रिपुरा के एक नौजवान होनहार छात्र एंजेल चकमा की, उत्तराखंड में की गई नृशंस हत्या पर किरण रिजिजू केंद्रीय मंत्री में कुछ इस प्रकार की भावनाएं व्यक्त की ---- ऐसी घटनाएं चाहे कहीं भी हो वे निंदनीय है और सब को मिल कर उनकी निंदा करनी चाहिए। इसे एक समाचार मात्र नहीं मानना चाहिए। बहुत से ऐसे जिन्हें बोलना चाहिए था, सदा की तरह खामोश रहे।

सुनिए मंत्री जी ----10 दिसंबर को शिकायत पर एफआईआर दर्ज नहीं, 12 दिसंबर को हल्की सी, जानलेवा हमले वाली एफआईआर दर्ज हुई, हत्या की धारा तो जुड़ी 26 दिसंबर को, उस की मृत्यु के बाद -- और सुनें मंत्री जी ---- उसे चाइनी, मोमोज जैसी नस्लीय गालियां दी गई।

लगता है, प्रारंभ में यह सब आपको, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री को सत्य से परे लगा होगा या सत्य से वाकिफ होते हुए भी आंखे मूंदे रखी होंगी क्योंकि सत्ता के लिए सत्य से मुंह भी फेर लिया जाता है किंतु सत्ता से परे भी सत्य होता है, जो लाख प्रयासों के बावजूद छुपता नहीं।

क्या कोई आमदमी इस पर विश्वास करेगा कि आप दोनों को और अन्य समस्त बड़े-बड़े सत्तासीन रहनुमाओं को 20 दिन से अधिक का समय लगा यह जानने में की नस्लीय आधार पर एक होनहार युवक को इतना पीटा कि उसकी मृत्यु हो गई? वह भी उतर पूर्व के एक बेहद संवेदनशील राज्य के युवक की।

सत्तासीन रहनुमाओं, कोई भी देशप्रेमी भारतीय नागरिक आप रहनुमाओं के आंसुओं वाली (असली थी या - नकली थी, भगवान जाने!!!) भावनाओं से सहमत होगा किंतु --- यह कोई इकलौती घटना भी तो नहीं-

भारत दुनिया भर में फैले हिंदुओं की चिंता करता है। किसी भी दूसरे देश में हिंदुओं की हत्या, नस्लीय दुर्व्यवहार, पर भारत कड़ा विरोध करता है। यह सब हमारे यहां की प्रेस, मीडिया जनता को समझाता रहता है; सरकार राष्ट्रवादी है! देहरादून में त्रिपुरा के छात्र एंजेल चकमा की मॉब लिंचिंग पर सन्नाटा क्यों पसरा था? क्या देश के नागरिकों की देश में ही गौ रक्षा, जाति-धर्म के आधार पर निजी या कई संगठनों के आपराधिक गिरोहों द्वारा सार्वजनिक रूप से हत्याओं पर चुप्पी राष्ट्रवाद की नई परिभाषा है ???

और सुने ---- अभी अभी गाजियाबाद में, हिंदू रक्षक सेना ने घर-घर जाकर तलवार फरसे बांटे हैं --- - कहा बताया, यदि किसी ओर देश जैसी स्थिति यहां आए तो उन--- काट दो --- क्या किसी अखबार, मीडिया में प्रमुखता से पढ़ने-सुनने को मिला!!!!

100 प्रतिशत सत्य, बंगला देश में कई हिंदूओं की नृशंस हत्या हुई है। धार्मिक उन्माद से किसी की भी हत्या होती है वह भर्त्सनिय है। ऐसी हत्या भारत में हो, बंगला देश में हो या किसी भी अन्य देश में हो उसकी हर व्यक्ति द्वारा कड़ी निंदा की जानी चाहिए।

देश के विभिन्न हिस्सों में मुसलमानों की मॉब लिंचिंग (भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या) हुई है। अपने ही देश के,कई प्रदेशों में, अन्य प्रदेशों से आए लोगों पर नस्लीय टिप्पणियां, हमले होते रहते हैं, दलित लोगों को मूत्र आदि पिलाया जाता है। इन सब पर सुविधाजनक चुप्पी राष्ट्रवाद नहीं पाखंडवाद है।

हमारे यहां जाति, धर्म, क्षेत्र को आधार बनाकर कुछ हत्याओं और भयंकर निंदनीय घटनाओं को उदाहरण स्वरूप लिख रहा हूं:----

पिछले कुछ वर्षों में भारत में दलित और आदिवासी समुदायों के खिलाफ मॉब लिंचिंग की कई घटनाएँ दर्ज हुई हैं, जो अक्सर गौ-रक्षा या जातिगत विवादों से जुड़ी रही हैं। ये घटनाएँ मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, झारखंड और अन्य राज्यों में हुईं। एमनेस्टी इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, 2015 के दादरी मामले के बाद से 70 प्रतिशत नफरत अपराधों में दलित पीड़ित थे, जिसमें लिंचिंग शामिल हैं। 2016 में ऊना में चार दलित युवकों को गौ-रक्षकों द्वारा मृत गाय की खाल उतारने के संदेह में पीटा गया।

2017 में बुलंदशहर में एक दलित व्यक्ति को गौ-हत्या के संदेह में भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला। 2018 में अलवर में रकबर खान को मुख्य रूप से गौ-तस्कर मान कर मार दिया। झारखंड: तब्रेज अंसारी की लिंचिंग हुई। मणिपुर में समुदाय के खिलाफ हिंसा में लिंचिंग जैसे मामले, हुए है। केरल में एक दलित प्रवासी मजदूर की लिंचिंग की गई।

2025 में सिटिजंस फॉर जस्टिस एंड पीस संस्था (सीजेपी) ने 113 जातिगत अत्याचार दर्ज किए, जिनमें लिंचिंग और हिंसा शामिल है।

सामाजिक रूप से बेइज्जत करने की इस से बड़ी घटनाएं ओर क्या होंगी जिन में जातीय आधार पर पेशाब पिलाया गया, टट्टी - विष्ठा खिलाई जाती है। उत्तर प्रदेश में सीताराम वाल्मीकि को फसल कटाई से इनकार पर पेशाब पिलाया गया। चुरू में पुरानी रंजिश में एक दलित व्यक्ति को अपहरण कर पेशाब पिलाया गया। मध्य प्रदेश में एक दलित व्यक्ति को पेशाब पिलाया गया। अजमेर नाबालिग दलित लड़के को शराब और पेशाब पिलाया। भिंड में एक दलित ड्राइवर को नौकरी छोड़ने पर पेशाब पिलाया गया। 2025 में लखनऊ में 65 वर्षीय दलित बुजुर्ग का मंदिर के पास में पेशाब लीक हुआ तो उस से पेशाब चटवाया गया। 2019 में थिन्नियम, पेन्नागराम (तमिलनाडु) में दलितों को मल खिलाया और पेशाब पिलाया गया। 2023, मध्य प्रदेश में दो युवकों को चेहरे काले कर मल खिलाया गया। केरल में एक दलित कॉलोनी के पानी में मल मिलाने की घटना हुई। 2025, मध्य प्रदेश में एक कांग्रेस नेता पर दो व्यक्तियों को जबरन मल खिलाने का आरोप लगा। टट्टी खिलाने की अत्यंत अपमानजनक घटनाएँ अक्सर जातिगत उत्पीड़न से जुड़ी।

इस प्रकार के मामलों की जानकारियां एनसीआरबी की वार्षिक रिपोर्ट्स, गूगल अथवा ग्रोक पर पब्लिक डोमेन में उपलब्ध हैं। भारत के किसी भी धर्म के कट्टरपंथी अगर ऐसा करते है तो हर धर्म के व्यक्ति द्वारा इसकी कड़ी से कड़ी आलोचना करनी चाहिए। ऐसे मामलों में हिंदू मुसलमान कदापि नहीं होना चाहिए।

अब जरा विचार करें --- भारत में कई बड़े-बड़े सामाजिक सुधार ,सामाजिक समरसता लाने की बात करने वाले, जातिगत भेद मिटा ने की ताल ठोकने वाले संगठनो में कुछ किया??? कभी सुना इन सब ने सांप्रदायिक सद्भाव के लिए, जातिगत पूर्वग्रह समाप्त करने के लिए कोई सार्थक आंदोलन किए है?? कई बार तो आम नागरिक यह महसूस करने लगता है कि क्या ऐसे उत्पत्ति लोग यह मान कर चलते है कि इनके सिर पर सत्ता की छत्र छाया है।

नाजियों की कार्यप्रणाली से मेल खाते ढंग से कार्यवाही करने वाली विभिन्न नामों वाली सेनाएं - दल हैं जो वैकल्पिक पुलिस की भूमिका में आकर कुछ भी हिंसक, गैर कानूनी काम, हत्याएं, भय पैदा करने वाली कार्यवाही बेहिचक करते है। यह संगठन, सेनाएं क्या खाना है, क्या नहीं खाना, क्या पहनना है, क्या नहीं पहनना है, कौन सा त्योंहार मानना है कौन सा नहीं वो अन्य हास्यास्पद आदेश जाती करते है और पालना के लिए कैसी भी कार्यवाही करने लगते है। यही वैकल्पिक पुलिसिंग है। क्या इनके विरुद्ध कभी कोई तत्काल व कठोर कार्यवाही होते देखा???

कार्यवाही होती है जरूर किंतु मंथर गति से, अपराधियों को बचाव के सारे पैंतरे आजमाने का पूर्ण अवसर देते हुए।

हुक्मरानों की हुक्मरान जाने, आम आदमी मानता है कि इक्का-दुक्का अपराधिक घटनाएं तो हो सकती है, होती भी हैं किंतु मॉब लांचिंग, जातीय आधार पर मार पिटाई, मूत्र पिलाने जैसी घटनाएं तो सख्त कार्यवाही कर पुलिस, सरकार निश्चित ही रोक सकती है। नहीं रुकती हैं, इस से गलत संदेश जाता है कि कहीं पुलिस का हाथ पीछे से खींचा तो नहीं जाता?? बार-बार होती इस प्रकार की निंदनीय घटनाएं कई बार यह सोचने को मजबूर करती है कि क्या यह सब एक निश्चित पैटर्न के अनुसार तो 4, 5, 6 माह के अंतराल पर रिपीट तो नहीं की जाती???? मुझे स्मरण पड़ता है कि 2014 से 2019 के बीच गुजरात में गौ रक्षकों की कुछ बहुत हरकतों पर माननीय प्रधान मंत्री जी में भी सार्वजनिक रूप से फटकार लगाई थी। कोई असर नहीं। एक संगठन के अति आदरणीय प्रमुख भी सार्वजनिक रूप से ऐसी हरकतों पर असहमति जाहिर कर चुके है। कोई असर नहीं। इसका उदाहरण है यूपी सरकार द्वारा दादरी वाली घटना से संबंधित मुकदमें को वापिस लेने की अर्जी।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

विराटनगर : मैड कस्बे के खटीकों के मोहल्ले में दस वर्ष से पेयजल संकट

घरों में जलदाय विभाग के कनेक्शन होने के बावजूद पानी नहीं आता, जबकि विभाग द्वारा हर महीने पानी का बिल भेजा जा रहा है

पावटा, (निसं)। विराटनगर उपखण्ड क्षेत्र के मैड कस्बे के खटीकों के मोहल्ले में पिछले 10 वर्षों से पेयजल संकट झेल रही महिलाओं का गुस्सा आखिरकार फूट पड़ा। पानी की गंभीर समस्या से परेशान महिलाओं ने शुक्रवार को मटकी फोड़कर विरोध प्रदर्शन किया।

मोहल्ले के पुरुष और महिलाओं ने पानी की गंभीर समस्या से परेशान होकर प्रदर्शन किया।

- **पानी की गंभीर समस्या से परेशान महिलाओं ने मटकी फोड़कर प्रदर्शन किया**
- **स्थानीय प्रशासन और जलदाय विभाग की उदासीनता पर ग्रामीणों ने नाराजगी जताते हुए जल्द समाधान की मांग की है**

प्रदर्शन कर रही महिलाओं ने बताया कि उनके घरों में जलदाय विभाग के कनेक्शन होने के बावजूद पानी नहीं आता, जबकि हर महीने नियमित रूप से पानी का बिल जरूर भेजा जा रहा है। कई बार शिकायत करने के बाद भी समस्या का कोई समाधान नहीं किया गया। गुस्साई महिलाओं ने बताया कि सरपंच के घर पहुंचकर समस्या से अवगत कराया गया तो सरपंच द्वारा 'क्या आपने मुझे वोट दिया था' कहे जाने बयान से महिलाओं में और अधिक रोष फैल गया। ग्रामीणों ने बताया कि पहले मोहल्ले में पाइपलाइन डाली गई थी, लेकिन बाद में जलदाय विभाग द्वारा उसे हटा दिया गया, जिससे स्थिति और भी गंभीर हो गई है। वर्तमान में मोहल्ले के लोग दूर-दराज से पानी लाने को मजबूर हैं। महिलाओं ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही पानी की व्यवस्था नहीं की गई तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा। स्थानीय प्रशासन और जलदाय विभाग की उदासीनता पर ग्रामीणों ने नाराजगी जताते हुए जल्द समाधान की मांग की है। महिलाओं ने बताया कि गांव में पेयजल आपूर्ति व्यवस्था चरमरा जाने के कारण ग्रामीणों को मजबूरी में निजी टैंकरों से पानी मंगवाना पड़ रहा है। हालात ऐसे हैं कि रोजमर्रा की जरूरतों के लिए भी पानी जुटाना ग्रामीणों के लिए बड़ी चुनौती बन गया है।

ग्रामीणों का कहना है कि कई बार संबंधित विभाग और प्रशासन को समस्या से अवगत कराया गया, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकला। मजबूरन जेब से पैसे खर्च कर टैंकरों से पानी डलवाया जा रहा है, जिससे आर्थिक बोझ भी बढ़ता जा रहा है। ग्रामीणों ने प्रशासन से जल्द से जल्द नियमित पेयजल आपूर्ति बहाल करने और वैकल्पिक व्यवस्था करने की मांग की है, ताकि उन्हें इस गंभीर समस्या से राहत मिल सके। इस दौरान गुलाब खींची, ओमप्रकाश खींची, प्रहलाद खींची, गोविंद नागर, ममता खींची, हितेश खींची, आशा खींची, कमला खींची, शकुंतला नागर, लक्ष्मी नागर, सोनू नागर, मन्नी खींची सहित बड़ी संख्या में महिलाएं व ग्रामीण मौजूद रहे।

सीकर जिले में 214516 व्यक्तियों ने खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ छोड़ा

- **गिवअप अभियान में 1046 अपात्र लोगों को नोटिस जारी किये, जिनसे वसूली की जायेगी**

सीकर, (निसं)। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के मार्गदर्शन में राज्य सरकार निरन्तर वंचित वर्गों के उत्थान के लिये कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री के स्पष्ट निर्देश है कि अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को सरकारी योजनाओं से जोड़कर लाभान्वित किया जाये ताकि वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ सके।

जिला रसद अधिकारी सीकर विजेंद्र पाल ने बताया कि 1 नवम्बर 2024 से प्रारम्भ गिवअप अभियान में सीकर जिले में 214516 व्यक्तियों ने स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ छोड़ा है। गिवअप अभियान में सीकर जिले में 1046 अपात्र लोगों को नोटिस जारी किये गये, जिनसे वसूली की कार्यवाही की जायेगी। गिव अप अभियान में अब प्रत्येक उचित मूल्य दुकान पर खाद्य विभाग के प्रवर्तन अधिकारी एवं प्रवर्तन निरीक्षक औचक निरीक्षण करने के साथ ही खाद्य सुरक्षा में चयनित अपात्र लोगों को नोटिस जारी करेंगे। प्रत्येक प्रवर्तन अधिकारी, निरीक्षक अब रोजना उचित मूल्य दुकानों पर पहुंचकर अपात्र व्यक्तियों की उचित मूल्य दुकानदारो के सहयोग से सूची तैयार करेंगे तथा वसूली एवं नोटिस संबंधी कार्यवाही भी करेंगे। खाद्य विभाग शीघ्र ही परिवहन विभाग से चार पहिया वाहन स्वामी का डाटा संकलित कर खाद्य सुरक्षा में चयनित अपात्र लोगों को नोटिस जारी करेंगे और वसूली की कार्यवाही की जायेगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 3 जनवरी, 2026

पौष मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, शनिवार, विक्रम संवत 2082, आर्द्रा नक्षत्र दिन 5:28 तक, ब्रह्म योग प्रातः 9:05 तक, बव करण दिन 3:33 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज पौषी पूर्णिमा, सत्यव्रत है। माघ स्नान आरम्भ होगा। आज शाकम्भरी देवी नवरात्रा समाप्त और शाकम्भरी प्राकट्य महोत्सव है। आज जन्मदिन हजरत अली (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ दिन 3:38 से 9:56 तक, चर 12:31 से 1:49 तक, लाभ-अमृत 1:49 से 4:24 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:42

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। पारिवारिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी। व्यक्तिगत कारणों से मानसिक तनाव बना रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा। विवादित मामलों से बचना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक मामलों में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

धनु
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कुंभ
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धामिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।